Er./Dr. A.B.L. Gupta (Tanmaya)
A.M.I.E. (India)
Executive Engineer (Retd.)
CONSULTANT HOMOEOPATH
Exponent of Vedic Philosophy
Founder of Science & Spirituality
Co-ordination Federation

श्री सनातन धर्म सभा (पंजीकृत)
शिव मन्दिर, लोक विहार, दिल्ली - 110034
卐
श्री गणेशाय नमः

Gayatri Dham
Pitam Pura, Delhi - 110034
Ph. [illegible]

दिनांक 1 जनवरी 2007
तिथि पौष कृष्ण [illegible]

क्या ईश्वर है ? - एक वैज्ञानिक परिचर्चा

1. आइंस्टीन का विचार :- अपनी पूर्ण उठती जवानी में, जब आईन्स्टीन ने अपने 'सापेक्षता के सिद्धान्त' को प्रकाशित किया ही था तब किसी ने पूछ लिया "क्या ईश्वर है ?" तो उत्तर था, कि "कदाचित् नहीं, फिर ईश्वर की आवश्यकता भी तो नहीं है ।" जब वही प्रश्न उससे उसकी मृत्यु के समय पूछा गया, तो उत्तर आया 'हाँ' ईश्वर है, क्योंकि यदि वह न होता, तो मैं मर न रहा होता तथा ईश्वर अपने मृत्यु दण्ड के द्वारा इस सृष्टि का नियमन जो करता है ।"

2. प्रकृति तथा ईश्वर का सम्बन्ध :- वैदिक साहित्य में पुरुष (ईश्वर) और प्रकृति के सम्बन्ध उसी प्रकार के बतलाये गये हैं, जिस प्रकार के महासागर और उस पर उठखेलियाँ करती चञ्चल एवम् परम शक्तिशाली उत्ताल लहरों के होते हैं । इस प्रकार **ईश्वर** जनक है, प्रकृति का अर्थात् पदार्थ जगत का । 'कार्य-कारण' के सिद्धान्त के अनुसार यदि शक्ति और महान पदार्थ जगत विद्यमान है, तो उसका सृजनकर्त्ता भी होना ही चाहिए । परन्तु यह 'कार्य-कारण' का सिद्धान्त इस वक्तव्य के पश्चात् ही समाप्त हो जाता है, क्योंकि वैदिक मनीषियों का मानना है, कि यह प्रश्न अबूझ पहेली है, कि ईश्वर का जनक कौन है ?

विज्ञान में भी क्रियाशक्ति (Force) तथा शक्ति (Energy) दो अलग-अलग बातें हैं । क्रियाशक्ति (Force) स्वयम् कार्य करती है, जबकि शक्ति (Energy) स्वयम् क्रियाशील नहीं होती । इसको गणितीय समीकरण के रूप में इस प्रकार लिखा जाता है । कुल शक्ति का व्यय = क्रियाशक्ति x चलित दूरी ($E = F \times d$) । क्रियाशक्ति का प्रभाव किये गये कार्य के रूप में देखा जा सकता है एवम् अनुभव किया जा सकता है, परन्तु क्रियाशक्ति (Force) को देखा नहीं जा सकता । ***इसी प्रकार से ईश्वर का प्रभाव सृष्टि के रूप में देखा जा सकता है, परन्तु उस (ईश्वर को) देखा नहीं जा सकता ।*** इस प्रकार वैदिक वैज्ञानिकों की सोच में और आधुनिक युग के वैज्ञानिकों की सोच में कोई विशेष अन्तर नहीं है, ***बल्कि वैदिक विज्ञानियों की समझ कहीं अधिक गूढ़ एवम् परिपूर्णता से ओत-प्रोत है ।***

प्रकृति में चार प्रकार की शक्तियाँ हैं । ***1.*** चुम्बकीय विद्युत शक्ति (Electromagnetic Force) ***2.*** गुरुत्वाकर्षण शक्ति (Gravitational Force) ***3.*** नाभिकीय बल (Nuclear Force or Strong Force) तथा ***4.*** क्षीण बल (Weak Force) । महान वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टीन एवम् अन्य वैज्ञानिकों ने इन चारों बलों को आपस में जोड़ने वाली शक्ति का सिद्धान्त गणितीय आधार पर खोजने के बहुत प्रयास किए, परन्तु अभी तक कोई सफलता नहीं मिली । कारण ? क्योंकि ईश्वर बुद्धि की सीमा से परे है, अतएव गणितीय क्षेत्र से भी परे है । वैदिक विज्ञानियों ने चारों बलों को जोड़ने वाले सूत्र का प्रतिपादन किया है और उसको नाम दिया है **"ब्रह्म"**, जिसका अर्थ होता है, कि जिससे बड़ा अन्य कुछ भी न हो । जब मस्तिष्क विचारों से शून्य हो जाता है और मानव गहरी ध्यानावस्था में उतर जाता है, तब चित्त के धरातल पर उस ब्रह्म की अनुभूति अखण्ड आनन्द के रूप में होती है । मन को होने वाली यह अनुभूति विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत है, यह न तो विभ्रम की स्थिति है और न ही इसे लम्बे वाद-विवाद के द्वारा समझा ही जा सकता है ।

3.(अ) ईश्वर की परिभाषा :- वेदों ने ईश्वर को सत् + चित् + आनन्द के रूप में परिभाषित किया है । इसका अर्थ यह हुआ, कि **ईश्वर एक अव्यक्त शक्ति है तथा अनन्त आनन्द वाला एक अचिन्त भाव मात्र है** । ईश्वर को पाँचों इन्द्रियों से तो अनुभव नहीं किया जा सकता, परन्तु उसे समाधि अवस्था में अवचेतन (चित्त) के धरातल पर अनुभव अवश्य किया जा सकता है । इसका अर्थ यह हुआ, कि ईश्वर कोई मानव प्राणी जैसा नहीं है । वेदों में ईश्वर को आगे और परिभाषित करने का प्रयास किया गया है, ① कि वह अजन्मा है, स्वयम् भू है, हर कारण का कारण है, इन्द्रियातीत है, किसी भी मशीनी दृष्टि से भी परे है, अव्यक्त है, निराकार है, अनाम है, कालातीत है अर्थात् समय से भी परे है, काल का भी काल है अर्थात् महाकाल तथा सर्वोच्च सत्ता है । वह अनन्त है, वह अनादि है, सत्ता मात्र है । सर्वशक्तिमान है, सर्वत्र व्याप्त है, सर्वज्ञ है, पूरी सृष्टि में वही एकमात्र जीवन्त है, जबकि सम्पूर्ण प्रकृति जड़ मात्र है, जो शक्ति एवम् पदार्थ का समन्वित योग है ①। ② जब भी और जहाँ भी अणु-परमाणुओं का एक विशिष्ट प्रकार का संयोग हो जाता है, तभी अनन्त जीवनों का स्पन्दन प्रारम्भ हो जाता है ②। ईश्वर की इच्छा मात्र से सृजन एवम् विनाश का खेल चलता रहता है । यह एक अनवरत प्रक्रिया है, जो चलती रहती है और चलती ही रहेगी । कोई नहीं जानता, कि कब से चल रही है और कब तक चलेगी । इसीलिए वेद ने ईश्वर को पूरी तरह न जान सकने के कारण ही नेति-नेति शब्दों का प्रयोग किया है ।

3.(ब) देवी-देवताओं की पूजा का विधान :- ③ ईश्वर के बारे में आगे भी कहा गया है, कि ईश्वर सृष्टि के सभी कार्य आँख, कान, नाक आदि इन्द्रियों के न होते हुए भी साधारण मानव की भाँति ही करता हुआ अनुभव में आता है ③। ***इस प्रकार के गूढ़ विचार वाले ईश्वर को जानने का कोई सरल मार्ग न था, अतएव आस्था एवम् विश्वास का आधार ही एक मात्र रास्ता रह गया था ।***

④ यद्यपि यह सत्य है कि परमात्मा अरूप है, निराकार है, परन्तु उसे ठीक से समझने समझाने हेतु ऋषियों ने **'प्रतीक विज्ञान'** का आविष्कार किया तथा प्रकृति में प्राप्त सभी सूक्ष्म शक्तियों को मानव प्रतीकों के रूप में वैज्ञानिक ढंग से चित्रित किया । तत्पश्चात कलात्मक ढंग से सजा सँवारकर जनसाधारण के द्वारा उपासना हेतु भव्य मन्दिरों में स्थापित कर दिया, **ताकि ध्यान करने की प्रक्रिया को सरल बनाया जा सके** ④। यही कारण है, कि वैदिक वाङ्मय में वैज्ञानिक ढंग से सृजित प्रतीकों की एक बहुत ही बड़ी शृंखला है । *(ऋषि का अर्थ है - विद्वान एवम् खोजी वैज्ञानिक)*

⑤ ऋषियों ने सर्वप्रथम अति शक्तिशाली तीन आधारभूत कणों को चिह्नित किया तथा उनका नामकरण भी किया । एलेक्ट्रॉन जो सृजनकर्त्ता है, उसे 'ब्रह्मा', प्रोटॉन जो पालनकर्त्ता है, उसे 'विष्णु', न्यूट्रॉन जो संहारकर्त्ता है, उसे 'शंकर' का नाम दिया गया । प्रकृति में प्राप्त अन्य सूक्ष्म शक्तियों से भी लाभ लेने हेतु शक्ति (Energy) जो पूरे विश्व में सृष्टि के निर्माण, पालन एवम् संहार का कार्य करती है, उसे देवी दुर्गा का, धन एवम् वैभव की देवी को लक्ष्मी का, बुद्धि के देवता को गणेश एवम् बल के देवता को हनुमान के प्रतीक के रूप में सृजित किया ⑤। ***ऋषियों ने इन तीन शक्तिशाली कणों का तथा अन्य प्राकृतिक शक्तियों का कभी भी विनाश के लिए उपयोग नहीं किया, अपितु इन प्रतीकों के माध्यम से उन्होंने ऐसी विधा का विकास किया, जिससे सांसारिक भोग पदार्थों की प्राप्ति के साथ-साथ अनन्त सुख-शान्ति की प्राप्ति हो तथा जीवन के अन्तिम लक्ष्य अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति भी हो जाय।***

⑥ ***उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है, कि परमात्मा के अतिरिक्त अन्य देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना करने का विधान मानव जीवन की दैनिक प्राथमिकताओं को ध्यान में रखकर किया गया था, ताकि सुखद जीवन जिया जा सके ⑥। यह विधान अपने आप में सराहनीय है, क्योंकि इस विचार में जीवन को सम्पूर्णता से समझने की दृष्टि है ।***

4. ध्यान का उद्देश्य एवम् वेद :- ⑦ कुछ लोगों का विश्वास है, कि इस ब्रह्माण्ड का रचयिता कोई नहीं है और यह मात्र स्त्री-पुरुष के संयोग से उत्पन्न हुआ है तथा जीवन का उद्देश्य मात्र "खाओ-पिओ और मौज करो" इतना ही है ⑦ अर्थात् बढ़िया खाना-पीना और वासना पूर्ति । लेकिन महात्मा बुद्ध की भाँति हर समझदार मानव को एक-न-एक दिन ऐसा अनुभव अवश्य होता है, कि जीवन का लक्ष्य इन सांसारिक भोगों से निश्चय ही परे है, क्योंकि पृथ्वी पर जो जीवन है, वह अनेक कष्टों से, जैसे - दुःख, दर्द, व्याधि, हताशा एवम् मृत्यु से ओत-प्रोत है । तब मानव अपने जन्म-मृत्यु के चक्र से छुटकारा पाने का प्रयास करता है ।

⑧ ध्यान क्रिया चित्त की आन्तरिक प्रसन्नता प्राप्त करने की श्रेष्ठ विधा है । ***यह प्रसन्नता बिना किसी प्रकार के व्यय के अनन्त काल तक स्थिर रह सकती है,*** क्योंकि तब इसमें न तो कोई दुःख है, न कोई दर्द ही ⑧। ध्यान प्रक्रिया द्वारा चित्त में पड़ने वाले सांसारिक संस्कारों (स्मृतियों) की छाप निरन्तर घटती जाती है, क्योंकि तब मानव मन इन्द्रियों से विरक्त होता जाता है, अतः अन्तर्मुखी हुआ होता है । गहरी ध्यानावस्था अथवा समाधि अवस्था के विभिन्न विस्तृत अनुभव हो सकते हैं, जैसे कि पूरी सृष्टि से एकात्मता की अनुभूति, अनवरत शान्ति अथवा अखण्ड आनन्द आदि । ***इस अवस्था में ईश्वरीय ज्ञान का झरना भी चित्त में फूट पड़ता है ।*** जैसे :- बाइबिल में उल्लिखित 'सत्य का संदेश' (Gospel of Truth) । वैदिक ऋषियों ने इस प्रकार की हज़ारों अनुभूतियों का वेद में उल्लेख किया है, जो हज़ारों साधकों द्वारा एक साथ अनुभव की गयी थीं । ***एक विशेष बात यह है, कि उन्होंने किसी व्यक्ति विशेष की अनुभूति को महत्व नहीं दिया, जब तक कि उसकी पुष्टि हज़ारों अन्य साधकों द्वारा बारम्बार नहीं हो गयी।***

यही कारण है, कि वेदों में किसी व्यक्ति विशेष के नाम का उल्लेख शायद ही मिलता है, ***इसीलिए वेद की वाणी को 'ब्रह्मा' की वाणी कहा गया है, क्योंकि इसे ऋषियों ने सामूहिक निर्णय द्वारा तय किया था और यही कारण है वेदों को अपौरुषेय, त्रिकाल सत्य तथा अन्तिम सत्य जैसी संज्ञाओं से अलंकृत किया गया है ।*** परन्तु हम लोग यह सब कुछ भूल चुके हैं, इसीलिए बारम्बार अन्य धर्मावलम्बियों के आगे अपमानित किए जाते हैं । सच्चाई यह होनी चाहिए, कि ***किसी एक व्यक्ति द्वारा कही गयी कोई भी बात यदि वेद विरुद्ध हो, तो उसे निरस्त माना जाना चाहिए, क्योंकि व्यक्ति विशेष कभी भी पूर्णता का दर्शन नहीं कर सकता ।***

5. ध्यान पूर्व की तैयारी :- कोई भी व्यक्ति भोगपरक जीवन जीते हुए समाधि अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकता, अर्थात् साधक को पूर्ण रूप से नैतिक जीवन का पालन करना आवश्यक है । इस कारण नैतिक जीवन जीने की विधा अर्थात् **'धर्म'** ***नामक अनुशासन परक विधान का आविष्कार किया गया । श्रीमद्भगवद् गीता नामक धर्म ग्रंथ पूर्णरूपेण वैज्ञानिक ढंग से लिखा गया एक श्रेष्ठतम ग्रंथ है ।*** श्री पातंजलि एक महान वैज्ञानिक एवम् योगी ने अपने सुप्रसिद्ध **"पातञ्जलि योग सूत्र"** में बड़े ही वैज्ञानिक ढंग से उन नियमों का उल्लेख किया है, जिनका पालन करने से समाधि अवस्था की प्राप्ति होती है । इसके अतिरिक्त और भी अन्य विधाएं हैं, जिन पर अमल करके अलग-अलग बुद्धि स्तर के व्यक्ति लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं । मुख्य मार्ग हैं:- ***ज्ञान योग, भक्ति योग, राज योग, निष्काम कर्म योग, हठ योग एवम् तन्त्र योग, इत्यादि।***

चित्र - 1

हमारी आकाशगंगा

1. आकाशगंगा की लम्बाई = एक लाख प्रकाश वर्ष
2. हमारे सूर्य की केन्द्र से दूरी = 32,000 प्रकाश वर्ष
3. एक प्रकाश वर्ष = 94 x 10^{11} कि मी

6. सूक्ष्म शरीर की रचना :- ⑨ ऋषियों ने पाया, कि मानव शरीर के भीतर एक सूक्ष्म शरीर होता है, जो चुम्बकीय विद्युत तरंगों का बना होता है और वह भौतिक शरीर को नियन्त्रित करता है । सूक्ष्म शरीर के चार भाग हैं । ***1.*** मन ***2.*** बुद्धि ***3.*** चित्त और ***4.*** अहंकार । इस शरीर को अन्तःकरण भी कहते हैं । अन्तः = भीतरी; करण = यन्त्र ⑨। इसे प्रेत शरीर भी कहा जाता है । वैदिक सिद्धान्त **"यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे"** के अनुसार विराट पुरुष की रचना तथा मानव शरीर की रचना एक जैसी है *(देखिए चित्र संख्या-1)* । चूँकि हमारी आकाशगंगा ही विराट पुरुष के नाम से कही गयी है, ***अतएव***

क्रियात्मकता और रचना दोनों भावों से मानव शरीर और ब्रह्म का यह शरीर व्यवहार में एक जैसे हैं । विराट पुरुष का भी विद्युत का शरीर मानव के सूक्ष्म शरीर जैसा ही है तथा ब्रह्म का शरीर (आकाशगंगा) पृथ्वी पर निवास करने वाले सभी प्राणियों का नियन्त्रण करता है । सभी तारे (सूर्य), नक्षत्र, ग्रह एवम् चन्द्रमा को मिलाकर विराट पुरुष कहा जाता है । इस क्रम में चन्द्रमा तथा सभी ग्रह मिलकर मानव मन का नियन्त्रण करते हैं तथा सारे सूर्य अर्थात् नक्षत्र, जो एलेक्ट्रॉन तारे आकाशगंगा के बाहरी वृत्त में हैं, मानव बुद्धि को नियन्त्रित करते हैं । हमारा सूर्य उनमें से एक है । इन तारों को ब्रह्मा कहा गया है और पूरे वृत्त को ब्रह्म लोक ।

भीतरी वृत्त में प्रोटोन तारों का जमावडा है, इनको विष्णु नाम से तथा पूरे भीतरी वृत्त को विष्णुलोक की संज्ञा दी गयी है । यह ब्रह्म के चित्त का कार्य करता है । जबकि केन्द्र स्थल जो न्यूट्रॉन तारों का एक सघन प्रकाश युक्त लम्बा एक विशालकाय स्तम्भ है, शिवलोक कहलाता है । इस स्तम्भ का भार कुल आकाशगंगा के भार का दो तिहाई है और पूरी आकाशगंगा को सम्भाले हुए है । यह भाग ब्रह्म के अहंकार का कार्य करता है ।

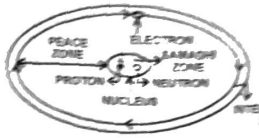

चित्र - 2

अणु की रचना

1. Binding force inside the nucleus between Proton and Neutron = 10 million volts
2. Electron moves round the Nucleus at an average speed of 600 miles/second
3. Centripetal force between the Proton and Electron = 10 volts *(Ref Tao of Physics by Dr. Fritjof Capra)*

भारतीय मनीषियों ने एक बात और खोजी, कि सूक्ष्म शरीर की हर इकाई, अणु की रचना जैसी है *(देखिए चित्र संख्या-2)* । अणु की नाभी के चारों ओर चक्कर काटता एलेक्ट्रॉन विचार प्रवाह उत्पन्न करता है । इन विचारों को नियन्त्रण करने का केन्द्र मानव की नाभी के पीछे सुषुम्ना नाड़ी पर स्थित मणिपुर-चक्र (Solar Plexus) है । जब मानव अपने ध्यान को किसी बिन्दु पर केन्द्रित करने का प्रयास करता है, तब एलेक्ट्रॉन अणु की नाभी की ओर अन्दर वाले वृत्त पथ पर खिसक जाता है और तब हमारी बुद्धि क्रियाशील हो उठती है तथा हम निर्णय कर पाते हैं । बुद्धि का नियन्त्रण केन्द्र दोनों आँखों की भौओं के बीचों-बीच माथे पर जहाँ तिलक लगाया जाता है, स्थित है, इसे 'शिव नेत्र' भी कहते हैं । ध्यानावस्था के अधिक गहराने पर एलेक्ट्रॉन नाभी के अधिक पास वाले अन्तर वृत्तों की ओर खिसकता जाता है और साधक को शान्ति का अनुभव होने लगता है । क्योंकि यहाँ पर शान्ति का क्षेत्र है, तब समय का भाव धीरे-धीरे साधक के मन से लुप्त होने लगता है और एलेक्ट्रॉन का नाभी के भीतर प्रवेश होने पर समाधि लग जाती है तथा अखण्ड आनन्द की अनुभूति होने लगती है । ⑩ नाभी के भीतर प्रोटॉन तथा न्यूट्रॉन दस लाख वोल्ट की विद्युत-शक्ति से एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं ⑩। प्रोटॉन (चित्त) अर्थात् अवचेतन मन एक आधुनिक कम्प्यूटर का कार्य करता है तथा यह बहुत ही बड़ी सृजनात्मक शक्ति रखता है । सूक्ष्म शरीर मानव के हर कोष्ठक में स्थित है और उसकी रचना अणु की रचना जैसी होती है । ऐसा लगता है, कि चित्त (प्रोटॉन) का नियन्त्रण केन्द्र Medula Oblongata पर तथा अहंकार (न्यूट्रॉन) का सिर के शीर्ष स्थान पर स्थित है, जिसे मेरुशिखर अथवा सहस्रार कहा जाता है । बारम्बार एवम् लम्बी अवधि वाली समाधि लग जाने पर साधक के शरीर में अत्यधिक चुम्बक शक्ति का संचय होने लगता है । इसका परिणाम होता है ऋद्धियों और सिद्धियों की शक्ति की प्राप्ति । तब हजारों लोग आकर्षित होने लगते हें और स्वत: अपार सम्पत्ति एवम् बेतहाशा प्रसिद्धि की प्राप्ति होने लगती है ।

7. मानव कम्पयूटर :- आधुनिक कम्पयूटर में तमाम स्मृतियों को सँजोकर रखने हेतु Zero एवम् One इन दो चिह्नों का प्रयोग किया जाता है । ठीक इसी प्रकार से मानव चित्त जीवन की तमाम घटनाओं को चित्रों अथवा चिह्नों की शक्ल में ही याद रखता है । आधुनिक कम्पयूटर की भाँति मानव चित्त को भी प्रतीक एवम् संस्कृत भाषा ही प्रिय है । मानव चित्त एक श्रेष्ठतम कम्पयूटर है । यह जीवन की घर घटना को अपने पर छाप लेता है तथा उनसे प्रभावित परिणामों को भी बतला देता है । लगभग 83% स्मृतियाँ आँखों द्वारा तथा 10% कानों द्वारा तथा शेष 7% अन्य तीनों इन्द्रियों द्वारा चित्त में पहुँचती हैं । ऋषियों ने भी खोजते-खोजते यह पाया, कि ***अनन्त जन्मों का होना जीवन की घटनाओं का लेखा-जोखा का परिणाम है, और यह भी पाया, कि यदि सभी स्मृतियाँ नष्ट कर दी जाएं अथवा स्मृति छपे ही नहीं, तो भी जन्म होना समाप्त हो जाएगा । वैदिक ऋषियों द्वारा खोजी गयी यह एक अनुपम एवम् सर्वोत्तम जानकारी थी ।***

इस प्रकार की महत्वपूर्ण खोज को ध्यान में रखते हुए "क्या ईश्वर है अथवा नहीं ?" यह प्रश्न गौण बन गया और ***सारे प्रयास इस दिशा में लग गये, कि किस प्रकार चित्त में कोई स्मृति न छपे अथवा छपी स्मृति किस प्रकार मिटा दी जाए, ताकि जीवन में होने वाले तमाम दु:खों से, जैसे - व्याधि, क्षय और मृत्यु इत्यादि से सदैव के लिए छुटकारा मिल जाए । योग के सभी विभिन्न मार्गों का मात्र यही लक्ष्य है ।*** इस विचार ने ऋषियों को **'मोक्ष प्रवण-समाज'** रचना के लिए प्रेरित किया, जिसमें सम्पूर्ण रूप से अनुशासन, शान्ति तथा खुशी थी, जबकि आधुनिक समाज की रचना का आधार इन्द्रियों को अधिक से अधिक तुष्ट करने पर टिका हुआ है । परिणामत: समाज में अनेकानेक अपराध, बेचैनी, व्याधियाँ तथा असामयिक मृत्यु हैं । ***एक समय था, जब पूरे विश्व में मात्र वैदिक धर्म ही था । चूँकि तब मोक्ष परक समाज में घृणा ही नहीं थी, अतएव युद्धों का कोई नामोनिशान भी नहीं था ।***

8. चक्र का सिद्धान्त :- *(11)* प्रकृति में सर्वत्र सभी कुछ चक्र में ही घूमता है । विज्ञान भी हमें बतलाता है, कि प्रकृति में कार्बन, ऑक्सीजन एवम् नाइट्रोजन चक्र हैं । कार्बन चक्र में कार्बन डाइऑक्साइड विभिन्न स्रोतों से वृक्षों को प्राप्त होती है और पेड़-पौधे इससे कार्बोहाइड्रेट बनाते हैं । पौधों द्वारा फल अथवा भोजन उत्पन्न करने में कार्बोहाइड्रेट की मुख्य भूमिका है । प्राणी वर्ग इस भोजन

को खाता है तथा पाचन के पश्चात् यह विष्ठा के रूप में बाहर निकल जाता है । इस प्रकार कैद हुआ कार्बन का अणु प्रकृति की किसी सृजनोन्मुख इच्छा की पूर्ति के पश्चात् पुनः वायुमण्डल में स्वतन्त्रता से घूमने लग जाता है । यही क्रिया हर क्षेत्र में हो रही है । अणु परमाणुओं और कणों का बन्धन में आना फिर स्वतन्त्र हो जाना, प्रकृति में एक अनवरत चलते रहने वाली प्रक्रिया है, जिससे प्रकृति की विशिष्ट योजना की पूर्ति होती रहती है *(11)*।

9.(a) मोक्ष की अवधारणा :- शक्ति तथा पदार्थ के बन्धन से आत्मा के छुटकारे को मोक्ष की संज्ञा दी गयी है । समाधि की अवस्था में जब एलेक्ट्रॉन की गति रुक जाती है, तब कुछ समय पश्चात् यह प्रोटॉन में समाहित हो जाता है और जब प्रोटॉन में सन्निहित सभी स्मृतियाँ शून्य हो जाती हैं, सिवा परमात्मा की अवधारणा के, तब यह न्यूट्रॉन में समाहित हो जाता है । तब मानव शरीर के न्यूट्रॉन समूह अन्तिम रूप से विराट से मिल जाते हैं, लगता है, इसी को मोक्ष कहा गया है, क्योंकि इसके उपरान्त वह न्यूट्रॉन समूह जन्म धारण नहीं करता । ***यह एक बहुत ही कठिनतम कार्य है, परन्तु यह कार्य मात्र मानव शरीर में ही सम्भव है*** । इसीलिए वेदों में ज़ोर देकर कहा गया है, कि मानव जीवन अनमोल है, इसे इन्द्रिय भोगों द्वारा नष्ट नहीं करना चाहिए, नहीं तो अगणित जन्मों तक जीवन-मृत्यु के चक्र में घूमना पड़ेगा । यह जीवन-मृत्यु का चक्र खनिज, उद्भिज, अमीबा, पक्षी, पशु और अन्त में मानव जीवनों में से गुजरता है ।

नोट :- *(12) वैशेषिका दर्शन शास्त्र के प्रणेता कणाद ऋषि ने **'आत्मा'** को **'पदार्थ'** बतलाया है, अतएव न्यूट्रॉन कण को आत्मा समझना उचित होगा **(12)**। **(13)** सर्वव्यापक चेतन आत्मा सर्वोपरि है तथा पुरुषोत्तम है **(13)**।*

9.(b) मोक्ष के पूर्व की तैयारी :- मोक्ष प्राप्ति हेतु मानव को सर्वप्रथम अपनी सभी पाँचों शरीरों से उत्पन्न इच्छाओं को तिलाञ्जलि देनी आवश्यक है ।

1. भौतिक शरीर की माँग :- इन्द्रियों की माँग अर्थात् काम (Sex), स्वादिष्ट भोजन, सुन्दर संगीत, सुन्दर रूप और सुगंध की चाह ।

2. मन की भावना सम्बन्धी माँग :- रति की इच्छा, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर (प्रमाद अथवा आलस्य), घृणा, ईर्ष्या, द्वेष एवम् भय ।

3. बुद्धि की माँग :- सृष्टि रचना के रहस्यों की खोज, जीवन के किसी भी क्षेत्र का अध्ययन एवम् शोध में व्यस्त रहना तथा अपने विचारों को दूसरों को बाँटना, आदि ।

4. चित्त (अवचेतन मन) की माँग :- पूर्व संस्कारों के वश में होकर दुर्गुणों, जैसे - धूम्रपान, शराब पीना, झूठ बोलना, दुष्टता का व्यवहार, हिंसा एवम् अनेक प्रकार के अन्य दुराचार में लिप्त रहना । निरन्तर नए-नए अच्छे व बुरे दोनों प्रकार के संस्कारों को जीवन में ग्रहण करते रहना ।

5. अहंकार (मैं) की माँग :- किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्ति के पश्चात् इस सफलता की प्राप्ति का कर्त्ता अपने को मान लेना और फिर उस अहंकार के कारण प्राप्त मान-सम्मान की भूख नित्य प्रति बढ़ती जाना । ***(14)*** वास्तविक बात तो यों है, कि प्रकृति के गुणों के कारण ही सारे कार्य होते हैं और मानव असहाय होकर मात्र उन्हें प्रकृति के गुणों के दबाव में करता भर है, वह सिर्फ प्रकृति की नियति का खिलौना भर है । अर्थ यह है, कि पूर्व संस्कारों का लेखा-जोखा, जो अवचेतन मन में छप जाता है, उसी के दबाव में मन क्रियाशील होकर मानव शरीर को कर्म के लिए प्रेरित करता है । परन्तु मानव भ्रमवश अपने को कर्त्ता मान लेता है ***(14)***, इसीलिए जन्म-मृत्यु के चक्र में घूमता रहता है ।

6. ईश्वर के नाम व रूप का निरन्तर चिन्तन व संकीर्तन :- उपरोक्त दुर्गुणों को छोड़ने के अतिरिक्त मानव को सद्गुणों के अर्जन से भी बचना होगा, नहीं तो उसे इन सद्गुणों के कारण सम्पन्न भोगमय तथा शालीन आध्यात्मिकता पूर्ण परिवार में जन्म की प्राप्ति हो सकती है और फिर भोगों में फँसकर उसका पतन भी हो सकता है, ***(15)*** अतएव साधक को सद्गुणों एवम् दुर्गुणों दोनों से ऊपर उठकर मात्र ईश्वर के नाम व रूप पर चिन्तन, मनन व संकीर्तन आदि करते रहना होगा, तभी उसे विराट पुरुष (परमात्मा) की प्राप्ति सम्भव है ***(15)***।

10. वैज्ञानिकों द्वारा प्रयोग :- ज्ञात हुआ है, कि कुछ वैज्ञानिकों ने "क्या परमात्मा है ?'' इस पर कम्प्यूटर की सहायता से शोध करने का प्रयास किया है । कुछ ने चुम्बकों द्वारा 'ध्यान' साधना को सरल बनाने का प्रयास भी किया है । ये बहुत ही अच्छे और सराहनीय प्रयास हैं । इससे आम जनता में ईश्वर, योग, ध्यान एवम् समाधि के प्रति व्याप्त रहस्यात्मकता पर पड़ा पर्दा हटने में सहायता मिलेगी । चुम्बकों द्वारा ध्यान लगाने में सफलता उसी प्रकार की है, जैसे मधुमेह के रोगी को इंसुलीन का दिन-प्रतिदिन इंजैक्शन का दिया जाना । वास्तविक लाभ साधक का तभी होगा, जब वह स्वयम् अनुशासित और संयमित जीवन जिएगा तथा धर्म के सारे नियमों का पालन करके अपने चित्त को शुद्ध बना लेगा, तभी वह ध्यान साधना में प्राकृतिक रूप से सफल होगा । कारण यह है, कि बारम्बार के ध्यान साधना के पूर्व की तैयारी के पश्चात् उसकी ध्यान साधना द्वारा अवचेतन मन (चित्त) पर जो दृढ़ संस्कार बनेंगे, वही उसे समाधि की सफल सीढ़ी तक ले जा सकेंगे और तभी साधक को जीवन के सभी प्रकार के दुःखों से छुटकारा मिल पायेगा । अगले पृष्ठ पर बना चित्र अवचेतन मन (चित्त) की कार्यशैली स्पष्ट करता है और बतलाता है, कि जीवन संस्कारों के वश में होकर किस प्रकार जन्म-मृत्यु के चक्र में अनवरत रूप से घूमता रहता है । ***हर छपी हुई स्मृति अपने आप को व्यक्त करने हेतु पहले इच्छा, फिर निश्चय, तब क्रिया रूप में प्रकट होती है । हर क्रिया की कुछ-न-कुछ प्रतिक्रिया होती ही है और वह***

लौट कर चित्त में पुनः नवीन स्मृति के रूप में छप जाती है और इस प्रकार मानव का जीवन-चक्र घूमता ही रहता है ।

चित्र 1
जीवन चक्र का चित्रीकरण

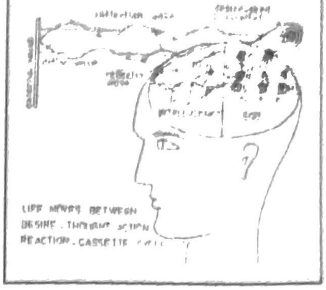

प्राचीन वैदिक भाषा में **'संस्कार'** कही जाने वाली बात को आधुनिक विज्ञान की भाषा मे **'सूचना'** (Information) के नाम से जाना जाता है । जीवन की हर घटना एक सूचना होती है जो स्मृति (Memory) के रूप में जीन्स (Genes) पर एक विशिष्ट संक्षिप्त भाषा (Codal language) में छपती रहती है । इन्हीं स्मृतियों के आधार पर और विराट के कम्प्यूटर अर्थात् प्रोटोन तारों के समूह (विष्णु) से पूरी तरह से तालमेल रखता हुआ मानव चित्त जीवन में फलाफल प्रदान करता रहता है । परिणाम होता है, अनेकानेक प्रकार की सुखद और दुःखद घटनाओं का जन्म, आधि-व्याधि और असामयिक मृत्यु आदि । ***इस प्रकार मानव जीवन कर्म के सिद्धान्त से पूर्ण रूप से शासित होता है ।***

भूतकाल में भारत भूमि पर उत्पन्न कुछ धर्म गुरुओं ने परमात्मा की स्थिति को नकारा है । उनमें मुख्य हैं - चार्वाक, गौतम, जैमिनी, कपिल, बुद्ध, महावीर आदि । बौद्ध एवम् जैन धर्मों में कदाचित् इसीलिए ध्यान एकाग्र करने हेतु प्रकाश अथवा चित्र/मूर्ति के स्थान पर श्वॉस तथा शरीर में होने वाली सम्वेदना का सहारा लेने की शिक्षा दी जाती है । परन्तु परमात्मा की स्थिति का विचार मोक्ष प्राप्ति की अवधारणा में सहायक रहा है, अतएव वैदिक ऋषियों ने इस विचार की ज़ोर-शोर से वकालत की है ।

11. ईश्वर सम्बन्धी एक सत्य कथा :- एक आदमी नास्तिक था, परन्तु उसका पुत्र आस्तिक था । पुत्र ने एक बार मन ही मन अपने पिता को शिक्षा देने की ठानी । पुत्र ने एक सुन्दर-सी कलाकृति बनायी और उसे अपने अध्ययन कक्ष में टाँग दी । दूसरे दिन बेटे ने अपने पिता को ले जाकर वह कलाकृति दिखलायी और उसके बारे में पिता से राय माँगी । पिता ने पुत्र की विलक्षण कला की पूरे मन से प्रशंसा की । पुत्र ने कहा, कि यह कलाकृति उसने नहीं बनायी, कुछ रंग मेज़ पर पड़े थे तथा कागज़ भी था, साथ में ब्रुश भी पड़ा था । हवा चली और ब्रुश का रंगों के साथ तथा कागज़ पर घर्षण हुआ और वह पेन्टिंग तैयार हो गयी । इतना सुनना था, कि पिता को समझ आ गयी, कि बेटा क्या संदेश देना चाहता है ।

परमात्मा कोई **पूर्व मान्यता** पर आधारित नहीं है और न ही उसे किसी प्रकार के **भय** के कारण मान्यता दी गयी है, जैसा कि **पश्चिम** के लोग सोचते हैं । परमात्मा की मान्यता मानव के महती कल्याण के लिए आवश्यक है । जो धर्म ईश्वर के होने पर विश्वास नहीं करते, उनकी सोच है, कि सारा का सारा पदार्थ जगत शून्य से उत्पन्न हुआ है । यह बड़ी ही साधारण-सी बात है, कि 'न कुछ' (शून्य) से इतना विराट ब्रह्माण्ड कैसे उत्पन्न हो सकता है ?? फिर एक बात और, कि प्रकृति में सर्वत्र नियमों का कड़ाई से पालन होते हुए देखा जाता है । तो यदि नियम हैं और इन नियमों को बनाने वाला न हो, ऐसा कैसे हो सकता है ? आखिर ये नियम फिर किसने बनाए ? इनको पालन करवाने का नियन्त्रण कौन करता है ? कहीं भी और कभी भी भूल न हो, इस बात को कौन देखता है ? ***वैदिक वैज्ञानिकों ने अपने बारम्बार के परीक्षणों के पश्चात् ही विग्रहों (प्रतीकों) के माध्यम से अव्यक्त एवम् निराकार परमात्मा को साक्षात् करने की विधा विकसित की थी । यह बात नोट करने योग्य है, कि ऋषियों द्वारा की गयीं सभी खोजें किसी भौतिक प्रयोगशाला में नहीं की गयी थीं, बल्कि मानव प्रयोगशाला द्वारा हुई थीं*** और यह विशाल वैदिक ज्ञान विश्व में सबसे प्राचीन है । ***ऋषियों ने आस्था और विश्वास के मार्ग के अतिरिक्त बौद्धिकता को अधिक महत्व प्रदान किया था तथा सभी को पूरी तरह से छूट दी थी, कि कोई भी विचारों का मन्थन करके ही अपना मार्ग चुने ।*** उन्होंने कभी भी अपने विचारों को न तो किसी प्रकार किसी पर थोपा और न ही अपने विचारों के प्रचार के लिए ताकत का ही इस्तेमाल किया । यही कारण है, कि ***वैदिक साहित्य सार्वभौम भी है तथा त्रिकाल सत्य भी ।***

12. जीवन का दर्शन विज्ञान (महत्वपूर्ण प्राकृतिक सिद्धान्त) :- मुख्य वैदिक सिद्धान्त निम्न प्रकार से हैं :-

***1.* चक्र के सिद्धान्त पर आधारित** :- (अ) कर्म फलाफल का नियम *(16)* (ब) पुनर्जन्म का नियम *(16)* (स) मृत्युलोक, स्वर्गलोक एवम् नरक लोक में आवागमन का नियम *(17)* (द) सृष्टि में परिवर्तनशीलता का नियम । *2.* यज्ञ (निष्काम सेवा) का सिद्धान्त*(18)*
3. यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे का सिद्धान्त अर्थात् मानव शरीर की रचना एवम् आकाशगंगा की रचना की समानता का सिद्धान्त
4. मानव जीवन में मोक्ष प्राप्ति की अवधारणा तथा लक्ष्य की प्राप्ति हेतु विभिन्न श्रेणी की योग विद्या तकनीकी का विकास ।
***5.* शान्ति एवम् समाधि की प्राप्ति हेतु** :- (अ) निर्गुण-निराकार उपासना पद्धति (ब) सगुण-साकार उपासना पद्धति । वास्तव में, वैदिक वैज्ञानिकों द्वारा की गयी खोजें इतनी विस्तृत हैं, कि वे जीवन के अनेक क्षेत्रों को अपने में समेटे हुए हैं तथा मुझे विश्वास है, कि आधुनिक विज्ञान भौतिक खोजों के अन्त में जब अध्यात्म की ओर मुड़ेगा, तब वैदिक खोजों की ही पुष्टि करेगा ।

→ हरि ॐ तत् सत् ! ←   *इंजी०/डॉ० अवध बिहारी लाल गुप्ता "तन्मय"*

संदर्भ :- **इंजी./डॉ. तन्मय द्वारा लेखन :-** *2.* प्राणियों का विकास-एक वैज्ञानिक परिकल्पना *4.* हिन्दू धर्म का आधार स्तम्भ-गायत्री मंत्र
5. ... 10. Tao of Physics, Page 253 (Dr. Fritiof Capra)